उत्तर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन के "मारवा थाट" अंतर्गत समाविष्ट रागों का विशिष्ट अध्ययन

Uttar Hindustani Shastriya Gayan Ke "Marva That" Antargat Samavisht Raago Ka Vishisht Adhyayan

(SYNOPSIS)

(विषय–संक्षेप)

फेकल्टी ऑफ परफोर्मिंग आर्ट्स

द महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा

पीएच.डी. (संगीत–गायन) की उपाधी हेतु प्रस्तुत शोध सार

शोधकर्ता विद्यार्थी
तर्जनी चंद्रकांत हिराणी

शोध निर्देशक **(Guide)**
डॉ. अश्विनी कुमार सिंघ

THE MAHARAJA SAYAJIRAO UNIVERSITY OF BARODA

सत्यं शिवं सुन्दरम्

गायन विभाग

द महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा

वर्ष : 2018-2021

Registration Date : **14/03/2018**
Registration No : **FOPA/76**

उत्तर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन के "मारवा थाट" अंतर्गत समाविष्ट रागों का विशिष्ट अध्ययन

❖ प्रस्तावना :

संगीत मानवजीवन के साथ अभिन्न रीत से जुडा हुआ है । संगीत के सानिध्य से इन्सान स्थिरता, स्वस्थता एवं शांति की अनुभूति करता है । मानवजीवन के लिए अति उपयोगी यह विषय के लिये शैक्षणिक अभिगम की हंमेशा कमी रही है । संगीत को शिक्षण का महत्तम हिस्सा न मानते हुए केवल एक सहायक विषय की तरहा स्थान दिया गया है । संगीत क्षेत्र में होने चाहिए वैसे और उतने संशोधन नहि हुए है ।

वर्तमान युग में विश्वस्तर पर अनेक विषयों पर नए नए संशोधनकार्य हो रहे है । विविध संशोधन में राष्ट्रीय एवं आंतरराष्ट्रीय कक्षा के संशोधन का समावेश किया जाता है । गुजरात में भी अनेक नामांकित संशोधन हुए है, तब अन्य विषयों के संशोधन की तुलना में संगीत विषय में हो रही शोध की संख्या एवं उस प्रत्ये की रूचि कम दिखाई देती है ।

संशोधन की दृष्टि में संगीत विषय में अनेक शक्यताए समावित है । विश्वकक्षा में भारतीय संगीत का एक विशेष स्थान, पहेचान एवं पुरातनता है । भारतीय संगीत के सानिध्य से मानवी ईश्वर का अनुभव करते है । संगीत मानवजीवन उपयोगी विविध तत्त्व जैसे की धैर्य, स्थिरता, श्रद्धा, संस्कार, भक्ति, आध्यिात्मिकता, सहिष्णुता का भरपूर संग्रह है । भारतीय शास्त्रीय संगीत मानवजीवन के उद्धार एवं उत्साह के लिये आवश्यक है । इस परिस्थिति में भारतीय शास्त्रीय संगीत पर संशोधन होना आवश्यक है । भारतीय शास्त्रीय संगीत को मुख्यत: दो विभाग में बाँट सकते है ।

(१) दक्षिण भारतीय संगीत (कर्णाटकी)

(२) उत्तर भारतीय संगीत

उत्तर भारतीय संगीत में कुल १० थाट पाये गये है । जिन सभी थाटों की स्वयंभु विशिष्टताएँ हैं जो खुद में ही अति विशाल सागर हैं । जिनकी गहराई में जाकर शोध करना अति आवश्यक है । जो उनकी अनजान प्रतिभाओं से हमें पहचान करवाने की कोशिष की है और इसी शुभ हेतु से **"उत्तर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन के "मारवा थाट" अंतर्गत समाविष्ट रागों का विशिष्ट अध्ययन"** यह विषय में शोधकार्य शोधछात्राने कीया है । इस विषय में थाट की गहराईओं के साथसाथ उसमें सम्मिलित रसों की पहेचान की गई हैं । जो मानवजीवन के स्वभाव को आकर्षित करेगी ।

❖ प्रस्तुत विषय पर शोध करने की आवश्यकता :

पिछले कई सालों से राष्ट्र एवं विश्व में शिक्षण क्षेत्र में अनेकविध संशोधन होते रहे है, विश्व के अनेक देशो में खुद के संगीत पर संशोधन करनेवाले शोधकर्ताओंने वहाँ के संगीत की समाज एवं मानव के लिये उपयोगिता साबित की है । भारतीय शास्त्रीय संगीत में भी मानवजीवन निर्माण एवं व्यक्ति निर्माण के गुढ़ तत्त्व सम्मिलित है । चंचल मन को स्थिरता प्रदान करके ध्यान, साधना, तप एवं ईश्वरीय अनुभूति जैसी अनेक बातों को इन्सान सहजता से समजता एवं अनुभव करता है । उस कारण से भारतीय शास्त्रीय संगीत में संशोधन करना अति महत्वपूर्ण है ।

इस शोधकार्य के द्वारा एक नवीन प्रयास किया गया है जिससे संगीत के विद्यार्थीओं, संगीत के कलाकारों एवं समग्र संगीतज्ञों को लाभ व एक नवीन द्रष्टिकोण प्राप्त होगा । उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत के विभिन्न पहेलु – जिसमें स्वर, थाट, राग, राग सौंदर्यतत्त्व जैसी अनेक बातें जुडी हुई है । शास्त्रीय संगीत गायन का मुख्य आधार थाट है । उत्तर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में १० थाट है । सभी थाटों की स्वयं विशिष्टताएँ है । संगीत के प्राचीन ग्रंथों, पुस्तकों,

शोधनिबंधों, लेखनों के अभ्यास के बाद **''उत्तर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन के ''मारवा थाट'' अंतर्गत समाविष्ट रागों का विशिष्ट अध्ययन''** यह विषय पर शोधकार्य करने का प्रयास किया है । यह संपूर्ण शोधकार्य में ठाठ एवं राग के स्वरों एवं राग की बंदिशों की रसनिष्पत्ति आकर्षण साबित हुआ है ।

❖ आंकडे एकत्र करने की विधि

1. विषयोचित्त के सभी संस्करणों का शोध पूर्ण रीति से अभ्यास किया गया है ।
2. देश के वर्तमान संगीत के कलाकारों से विषय संबंधित तथ्यों पर चर्चा की गयी है ।
3. मध्यकालीन एवम् वर्तमान में लिखे विषयोचित्त संदर्भित पुस्तकों का अध्ययन किया गया है ।
4. आधुनिक उपलब्ध सुविधा व इन्टरनेट के माध्यम से भी दत्तसामग्री को एकत्र किया गया है ।
5. विषय संबंधित संगीत पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों का अध्ययन किया गया है । संगीत के मान्यता प्राप्त पत्रिकाओं में प्रकाशित विविध विषयोचित्त संदर्भित शोध लेखों का भी अध्ययन किया गया है । इसके अलावा अन्य शोधपत्रिकाओं एवम् सेमिनार में प्रस्तुत हुए शोधपत्रों के प्रोसीडिंग का भी आवश्यकता अनुसार अध्ययन किया गया है।
6. विविध सेमिनार, कोन्फरन्स को शोधार्थी द्वारा भाग लिया गया है वहाँ उपस्थित संगीत विशेषज्ञों से भी साक्षात्कार द्वारा प्राप्त विषयोचित्त संबंधित तथ्यों को भी उजागर किया गया है । शोधार्थी द्वारा यह प्रयास किया गया है कि जहाँ–जहाँ से भी विषयोचित्त संबंधी जानकारी प्राप्त हुई है उन सभी को एकत्र किया गया है और उस उपलब्ध दत्तसामग्री को उसकी उपयोगिता के अनुसार शोधार्थीने शोध प्रबंध में स्थान दिया गया है ।

❖ पुनरावलोकन :

प्रस्तुत विषय के संबंधित जो तथ्य प्राप्त हुए है, उनके अनुसार इस शोधकार्य को अधिक से अधिक पुनरावृत्ति से बचने का प्रयास किया गया है और संबंधित विषय में विषयोचित्त शास्त्र की द्रष्टि से कार्य प्राप्त नहीं होता है । जो इस कार्य के महत्व को प्रस्तुत करता है और साथ ही साथ इस कार्य की वस्तुनिष्ठा को भी व्यक्त करता है ।

❖ शोधकार्य पद्धति एवं योजना

वर्तमान काल में विश्व अकल्पनीय गति से आगे बढ़ रहा है । दिनप्रतिदिन नई नई शोध हो रही है । सालों से जो मुद्दे अंधकार में थे जिन्हें नजरअंदाझ किया जा रहा था उन पर रोशनी डाली जा रही है । तमाम क्षेत्र में परिवर्तन पाया जा रहा है और यदी देखा जाए तो परिवर्तन वह समाज का नियम है तब हिन्दुस्तानी संस्कृति की शान हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत क्षेत्र में भी शोध होनी आवश्यक है । संगीत क्षेत्र में अनेक संशोधनकार्य हो रहे है । ज्ञान एवं महाज्ञान के युग में माहिती विज्ञान बहुत आगे बढ रहा है । प्रत्येक क्षेत्र में जीवन बदल रहा है किन्तु इनके आगे बढते हुए दिनों में कहीं कुछ अमूल्य द्दष्टिकोण को नजरअंदाझ किया जा रहा है । हमारे पास खजाना है, किन्तु उसके लिये नज़रीया, उसका महत्व, उसकी अनगिनत छुपी विशिष्टताओं को रोशनी में लाने की अत्यंत आवश्यकता है यह बात शोधछात्रा द्दढता से मानती है । हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के पास अमूल्य देन है जिसे कहीं ना कहीं बहुत दीर्घ–द्दष्टि से जाँचा नहीं गया है । हिन्दुस्तानी संगीत के एक एक पहेलु में कई महत्वपूर्ण मतलब, शीख छुपी हुई है जो मानवजीवन के लिये अति लाभदायी साबित हो सकती है और वहीं लाभदायी पहेलुओं को सूक्ष्मता से जाँचके आनेवाली पिढ़ी के लिये एकत्रित करने की भावना लेकर शोधछात्रा ने इस विषय के अंतर्गत विनम्र प्रयास किया है ।

❖ उद्देश्य

प्रागैतिहासिक काल से ही संगीत की परंपरा भारत वर्ष में विद्यमान हैं । भारतीय परंपरा, संस्कृति, स्थानिक, राजनैतिक, सामाजिक, प्रदर्शवर्ति इत्यादी परिस्थितियों के साथ समय पर आवश्यकता अनुसार परिवर्तन आया है और एक सुंदर शास्त्र प्राप्त हुआ है । संगीत शास्त्र में गायन, वादन एवं नृत्य का समावेश होता है और यह तीनों विद्या खुद की स्वतंत्र परंपरा के रूप में प्रस्थापित हुई है जिसमें गायन परंपरा का आधार है "थाट" और "थाट जन्यराग" ।

वर्षो से थाट एवं थाट जन्यराग गाये बजाए जाते है, किन्तु उन थाटों के प्रति, उन रागों के प्रति हरएक संगीतकार का दृष्टिकोण अलग-अलग रहता है । वह विभिन्न नज़रीये एकत्रित करके एक नया पथ प्रदर्शित करने का हेतु शोधछात्रा का है । जिसका प्रभाव भावि पिढ़ी पर भी अवश्य होगा । यह विनम्र प्रयास शोधछात्रानें हाथ में लिया है जो आनेवाले समय के लिए और भी पहेलु में नई शोध होगी यह दृढ विश्वास के साथ श्रद्धा है ।

अनुक्रमणिका

इस शोधकार्य को शोधछात्राने निम्नलिखित प्रकरणों से विभाजित किया है ।

प्रकरण–1 विषय प्रवेश

1.1 संगीत का उद्‌भव एवं विकास

1.2 संगीत के विभिन्न प्रकार

1.2.1 शास्त्रीय संगीत

1.2.2 सैद्धांतिक शास्त्रीय संगीत

1.2.3 व्यवहारिक शास्त्रीय संगीत

1.2.4 भाव संगीत

1.3 नाद

1.3.1 नाद स्थान

1.3.2 नादब्रह्म और सात स्वरों का आविर्भाव

1.4 ध्वनि

1.5 शास्त्रीय संगीत की गायन शैलियाँ

1.5.1 प्रबन्ध के धातु

1.5.2 प्रबन्ध के अंग

1.5.3 प्रबन्ध के प्रकार

1.5.4 ध्रुपद गायन की रचना एवं शैलियाँ

1.5.5 ख्याल गायन शैली उद्‌भव, विकास एवं विवरण

1.5.6 ख्याल अंग में प्रयुक्त ताल

1.5.7 तराना

1.5.8 चतुरंग

1.5.9 लक्षण गीत

1.5.10 ठुमरी

प्रथम अध्याय : शोधार्थी के शोध प्रबंध का विषय है ''उत्तर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन के ''मारवा थाट'' अंतर्गत समाविष्ट रागों का विशिष्ट अध्ययन'' । इसके मुताबित मेरा मूल विषय है 'संगीत' और इस गहन कला के संपूर्णतः शब्दों में बुनकर प्रस्तुत करना असंभव है । इसीलिए मैंने संगीत की केवल विभावना बाँधी है । जिसे विश्व में संगीत के स्थान की बात से शुरू करके संगीत की लौकिक एवं अलौकिकता के बारे में चर्चा की है । संगीत कला की विभिन्न व्याख्या, समयकाल, संगीतोत्पत्ति की विभिन्न मतों की चर्चा की है जैसे की धार्मिक मत, प्राकृतिक मत, वैज्ञानिक मत, सामाजिक मत इत्यादि । इसके साथ ही संगीत की

वैविध्यता की चर्चा की गई है । जिसमें शास्त्रीय संगीत, भाव संगीत का समावेश होता है । तद्उपरांत संगीत की नींव समान उसके तत्त्व जैसे की ध्वनि, नाद, नादस्थान, नादब्रह्म और स्वरों के आविर्भाव के बारे में विस्तृत चर्चा की गई है, जो कि संगीत की गहराई समझने में मददरूप है । इस प्रकरण के अंत में संगीत की विविध गायन शैलीयों का समावेश किया गया है जिसमें संगीत के विविध रंग, वैविध्यता का परचा मिलता है । जैसे की प्रबद्ध, ध्रुपद, ख्याल, लक्षण गीत, तराना, चर्तुरंग एवं ठुमरी की बात कि गई है । ऐसे ही विश्लेषण के साथ यह प्रथम प्रकरण का यहाँ अंत होता है ।

प्रकरण–2 उत्तर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत पद्धति

2.1 श्रुति

- 2.1.1 श्रुति की परिभाषाएँ
- 2.1.2 श्रुति – स्थूल रूप
- 2.1.3 श्रुति में साम्य
- 2.1.4 श्रुति संख्या
- 2.1.5 श्रुति में असाम्य
- 2.1.6 श्रुति जाति
- 2.1.7 श्रुति का वैज्ञानिक विश्लेषण
- 2.1.8 प्राचीन ग्रंथकारों की समान श्रुतियाँ

2.2 स्वर

- 2.2.1 स्वर का प्राकृतिक उद्‌भव
- 2.2.2 स्वर और उसके पर्याय
- 2.2.3 स्वर की परिभाषा तथा उनका संक्षिप्त विश्लेषण
- 2.2.4 स्वर सम्बन्धी अन्य दृष्टिकोण

2.3 स्वरों की उत्पत्ति, उद्‌भव स्थान के संदर्भ में मान्यताएँ

2.3.1 सामवेद के स्वर और उनके नाम

2.3.2 स्वर के तीन स्थान

2.3.3 स्वरों का प्रियत्व और जगत् का सामोपजीवित्व स्वर और जीवों का सम्बन्ध

2.3.4 स्वरों की तारता का निर्धारण

2.3.5 भिन्न-भिन्न स्वरों का उत्पत्ति-स्थान और उनका नामकरण

2.3.6 स्वरों के मुख, भुजा

2.3.7 स्वर शारीरिक स्थान

2.3.8 स्वर लक्षण

2.4 स्वरों की प्रकृति, स्वभाव एवम् रंग

2.5 स्वरों में निहित सौन्दर्य

2.5.1 स्वरों की उपयोगिता

2.5.2 वर्ष और दिवस की ऋतुओं का मेल

2.5.3 षड़ज स्वर में निहित सूर्यशक्ति

2.5.4 स्वर अलंकार

2.5.5 वादी स्वरों का राग के समय के साथ सम्बन्ध

2.5.6 पूर्वांग और उत्तरांग का क्षेत्र विस्तार

2.5.7 स्वर लगाव

2.5.8 स्वर या आवाज़ का लगाव

2.5.9 स्वर लेखन पद्धति

2.6 सप्तक

2.6.1 संगीत में सप्तक का विकास

द्वितीय अध्याय : प्रकरण दूसरे में उसके शीर्षक को ध्यान में रखते हुए संगीत की गहनता की बात करते हुए संगीत की परिवर्तित पद्धति पर ध्यान दिया है । वर्तमान समय की प्रचलित संगीत पद्धति थाट राग वर्गीकरण की बात निकालकर चर्चा कर रहे है तो थाट एवम् राग की नींव समान स्वरों की चर्चा किये बिना आगे बढ़ना निरर्थक माना जाएगा । इसी कारणोसर थाट को अगले प्रकरण के लिए छोड़कर यह प्रकरण में श्रुति, स्वर, सप्तक की चर्चा की है, जिसमें श्रुति के अंतर्गत श्रुति की परिभाषाएँ, श्रुति का स्थूल रूप, श्रुति की साम्यता, श्रुति की असाम्यता, श्रुति संख्या, श्रुति जाति, श्रुति के बारे में किये गये वैज्ञानिक विश्लेषण और प्राचीन ग्रंथकारों के समान श्रुतियों के बारे में चर्चा कि गई है । आगे बढ़ते हुए स्वर के प्राकृतिक उद्‌भव, स्वर की परिभाषाएं, स्वरों से संबंधी द्रष्टिकोण, स्वरों की उत्पत्ति के साथ ही स्वर के उद्‌भव स्थान के संदर्भ में मान्यताएं, सामवेद के स्वर और उनके नाम, स्वर और उनके नाम, स्वर के तीन स्थान की चर्चा करते हुए स्वरों के विभन्न रंगों को सामने लाया है, जहाँ स्वरों के मुख, भूजा, शारीरिक स्थान, स्वरलक्षण, प्रकृति, स्वभाव, रंग, स्वरों में छुपा निहीत सौंदर्य, स्वरों की उपयोगिता, वर्ष और दिन की ऋतुओं का मेल, सूर्यशक्ति, स्वर अलंकार, वादी स्वर, समय संबंध, पूर्वांग, उत्तरांग, स्वर लगाव, लेखन पद्धति जैसे मुद्दो की विस्तृत चर्चा करते हुए अंत में सप्तक और संगीत में सप्तक का विकास के बारे में चर्चा करते हुए इस प्रकरण को यहाँ पूर्ण किया है ।

प्रकरण–3 थाट और उनके जन्य राग

3.1 भारत में संगीत की पद्धति

3.1.1 शिवमत

3.1.2 हनुमानमत

3.1.3 रार्गाणव ग्रन्थमत

3.1.4 कल्लीनाथ ग्रन्थमत
3.1.5 भरतमत
3.1.6 महमद रजा मत
3.2 थाट
3.2.1 ठाठों में समावित रागों की सूचि
3.3 थाट वर्गीकरण
3.3.1 थाट–रचना–विधि
3.4 पंडित व्यंकटमुखी के ७२ थाट
3.4.1 ७२ थाट के नाम
3.4.2 कर्नाटक पद्धति के ७२ मेल
3.5 ३२ थाट
3.6 पंडित विष्णु नारायण भातखंडेजी के १० थाट वर्गीकरण
3.7 थाट के नियम
3.8 मेल वर्गीकरण
3.9 एक थाट से 484 रागों की उत्पत्ति
3.10 राग और राग उत्पत्ति
3.10.1 राग
3.10.2 हिन्दुस्तानी संगीत में 'राग' की उत्पत्ति और विकास
3.10.3 संगीतोत्पति का कारण
3.10.4 राग की शास्त्रोक्त व्याख्या
3.10.5 राग की प्रकृति
3.10.6 राग का गायन समय

3.10.7 राग भेद

3.10.8 रागों का समय विभाजन

3.10.9 स्वर और समय की द्दष्टि से रागों के तीन वर्ग

3.10.10 अध्वदर्शक स्वर मध्यम का महत्व

3.10.11 रागों का समयचक्र

3.10.12 राग विस्तार

3.10.13 राग चयन

3.10.14 दस वीध राग लक्षण

3.10.15 राग के नियम

तृतिय अध्याय : शोध विषय के इस प्रकरण में शोधार्थीने शोध विषय के मुख्य मुद्दे की गहराई में चर्चा की है । इस प्रकरण के शुरूआत में भारतीय शास्त्रीय संगीत पद्धति के मत की चर्चा की है, जिसमें शिवमत, हनुमान मत, रागार्णव ग्रन्थमत, कल्लीनाथ मत, भरत मत और महमद रजा मत के बारे में चर्चा की है । आगे बढ़ते हुए 'थाट' शब्द का महत्व समझाया गया है जिसमें थाट की व्याख्या समझाते हुए थाट वर्गीकरण और उसमें थाट की रचनाविधि को जानते हुए पं.व्यंकटमुखी के ७२ थाट के बारे में चर्चा की है तथा ७२ थाट के नाम के साथ कर्णाटक पद्धति में ७२ थाट के स्वरों के साथ दर्शाया है । ७२ थाट के पश्चात् ३२ थाट तथा उनके नाम की चर्चा की है । तद्उपरांत ३२ थाट से पं. विष्णुनारायण भातखंडेजी के १० थाट वर्गीकरण की चर्चा की है, जिसमें थाट के नियम तथा मेल वर्गीकरण को विस्तृतरूप से समझाया गया है, यह वर्गीकरण के बाद एक थाट से ४८४ रागों की उत्पत्ति के बारे में शोध की गई है । थाट से रागों की उत्पत्ति के बाद राग के बारे में चर्चा की गई है जिसमें हिन्दुस्तानी संगीत में राग की उत्पत्ति और विकास के साथ राग की संगीतोत्पत्ति का कारण बताते हुए राग की शास्त्रोक्त व्याख्या, प्रकृति, गायन समय, समय विभाजन, रागभेद, स्वर और समय की द्रष्टि से रागों के तीन वर्ग, रागों का समयचक्र, राग में अर्ध्वदर्शक स्वर मध्यम

की महत्वत्ता, राग विस्तार, रागचयन तथा दस वीध राग लक्षण दर्शाते हुए राग के नियम बताएँ हैं और इस तरह से यह प्रकरण का अंत किया है ।

प्रकरण–4 मारवा थाट तथा उसके जन्य रागों का अध्ययन

4.1 मारवा थाट

4.2 मारवा थाट तथा राग की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

4.3 मारवा तथा उसके समप्रकृतिक राग

4.4 मारवा थाट के रागों का वर्णन

4.4.1 मारवा थाट के प्रचलित रागों का अध्ययन एवं बंदिशें

4.4.1.1 राग : मारवा

4.4.1.2 राग : जैत

4.4.1.3 राग : पूरिया

4.4.1.4 राग : पूरिया कल्याण

4.4.1.5 राग : भटियार

4.4.1.6 राग : ललित

4.4.1.7 राग : विभास

4.4.1.8 राग : सोहनी

4.4.2 मारवा थाट के अप्रचलित रागों का अध्ययन एवं बंदिशें

4.4.2.1 राग : धन्यधैवत

4.4.2.2 राग : पंचम

4.4.2.3 राग : पंचम मारवा

4.4.2.4 राग : भंखार

4.4.2.5 राग : मार्ग हिंडोल

4.4.2.6 राग : मालीन

4.4.2.7 राग : मालीगौरा

4.4.2.8 राग : रत्नदीप

4.4.2.9 राग : ललित पंचम

4.4.2.10 राग : वराटी

4.4.2.11 राग : साजगिरी

4.4.2.12 राग : मृगनयनी

चर्तुथ अध्याय : पूर्व निर्देशित तीन प्रकरणों में शोधार्थी ने शोधप्रबंध की हर सूक्ष्म बातों का स्पष्टीकरण करते हुए चर्तुथ प्रकरण में केवल हमारे मुख्य उद्देश्य पर ध्यान केन्द्रित करना स्वाभाविक था । उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में थाटों का एक विशिष्ट महत्व रहा है । थाटों के विषय में अनेक मतमतांतर के साथ नवीन थाट रचनाओं का औचित्य प्राप्त होता है । उत्तर भारतीय संगीत में मुख्य दस थाट प्रचलन में हैं । वह थाटों में से मारवा थाट का एक पारंपारिक अध्ययन इस प्रकरण में दर्शाया गया है, जिसमें मारवा थाट तथा राग की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के बारे में विस्तृत चर्चा कि है तथा मारवा थाट के मारवा और उनके समप्रकृतिक राग के बारे में चर्चा करते हुए मारवा थाट के प्रचलित राग एवं अप्रचलित रागों के बारे में बंदिशों के साथ रागों का विवरण किया है तथा बंदिश मे और राग में छुपे हुए निहित सौंदर्य के बारे में सविस्तृत चर्चा की है । बंदिश के शब्दों से उत्पन्न होते रसोत्पत्ति के अनुभव तद्उपरांत बंदिश का लिपिकरण, स्वरों संगति जैसे मुख्य तत्त्वों की चर्चा की है । प्रचलित रागों की सूचि में राग : मारवा, राग : जैत, राग : पूरिया, राग : पूरिया कल्याण, राग : भटियार, राग : ललित, राग : विभास, राग : सोहनी जैसे रागों का विश्लेषण किया है तथा प्रकरण के अंतिम दौर में मारवा थाट के अप्रचलित रागों में राग : धन्यधैवत, राग : पंचम, राग : पंचम मारवा, राग : भंखार, राग : मार्ग हिंडोल, राग : मालीन, राग : मालीगौरा, राग :

रत्नदीप, राग : ललित पंचम, राग : वराटी, राग : साजगिरी, राग : मृगनयनी जैसे रागों का विश्लेषण किया है और यह प्रकरण को पूर्ण किया है ।

प्रकरण–५ उपसंहार

उपसंहार : प्रकरण–५ के आरंभ में जाना की उपसंहार शब्द को न्याय देते हुए शोधार्थीने इस प्रकरण में पूर्व चार प्रकरण में विवरण की गई माहितीओं का सिंहावलोकन इस प्रकरण में प्रस्तुत किया है । इसी के साथ शोधार्थी के महा शोधप्रबंध के आखरी प्रकरण के आखरी चरण में अपने सारे मुद्दो को एक बार एकत्रित करके रखा है । प्रकरण–१ में संगीत की उत्पत्ति, विकास एवं मनुष्य के जीवन में स्थान की चर्चा की गई है जिससे संगीत के असर का अंदाजा हम लगा सकते है । संगीत के उद्‌भव के साथ ही नाद, ध्वनि तथा शास्त्रीय संगीत की विभिन्न गायन शैलियों के बारे में चर्चा की गई है । आगे बढ़ते हुए प्रकरण–२ में संगीत पद्धति को ध्यान में रखते हुए थाट तथा राग के नींव समान श्रुति, स्वर और सप्तक के बारे में विस्तृत चर्चा की है । प्रकरण–३ में थाट के बारे में गहराई में चर्चा की है । थाट तथा उनके जन्य रागों के साथ ही भारतीय संगीत पद्धति में महत्व रखनेवाले मत – शिवमत, हनुमान मत, रागार्णव मत, कल्लीनाथ मत, भरत मत, महमद रजा मत की विस्तृत चर्चा की है । साथ ही थाट वर्गीकरण और पं. व्यंकटमुखी के ७२ थाट उसके बाद ३२ थाट और पं. विष्णुनारायण भातखंडे जी द्वारा दीये गये हुए १० थाट का विशिष्ट अध्ययन करते हुए थाट के नियम, मेल वर्गीकरण तथा एक थाट से ४८४ रागों की उत्पत्ति का विस्तृत विवरण किया गया है तथा राग के बारे में भी गहराई में चर्चा की है । प्रकरण–४ में जनक थाट मारवा की गहराई में चर्चा की गई है । थाट तथा थाट के अंतर्गत रागों का वर्णन किया है और अंतिम प्रकरण में

शोधप्रबंध का मुख्य उद्देश्य की और प्रकाश डाला है जिसमें मारवा थाट अंतर्गत प्रचलित एवं अप्रचलित रागों का वर्णन, रागों की विभिन्न रसयुक्त बंदिशें एवं रसात्मक अध्ययन को स्थान दिया गया है जिससे एक आकर्षक संदेश देने का प्रयत्न किया गया है कि कोई भी राग किसी एक प्रकृति या रस के आधीन नहीं होता । किसी भी राग के मर्यादित स्वरों को व्यवस्थित रूप में बाँधा जाए तो एक ही राग में से हमें विभिन्न रसों की युक्ति हो सकती है जिसका कारण वह रागों की बंदिशों के शब्द, बंदिशों की स्वररचना, न्यास स्वर भी हो सकते है । इस परिपाक का अनुभव करने के लिए संगीतकार का केवल द्रष्टिकोण विकसीत होना चाहिए, जिस संदेश को देने का प्रयत्न इस शोधप्रबंध में किया गया हैं । इस महा शोधनिबंध के अंत में शोधकार्य में उपयोग में लिए गए संदर्भग्रंथों की सूचि देकर महा शोधनिबंध को पूर्ण घोषित किया है ।

➤ संदर्भसूचि

(१) वसंत / संगीत विशारद / संगीत कार्यालय, हाथरस 204101 / 20TH Edition / ISBN : 81-85057-00-1

(२) सिंह, ललितकिशोर / ध्वनि और संगीत / भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ही / 6TH Edition –2004 / ISBN : 81-263-1044-8

(३) कौर, भगवंत / परंपरागत हिन्दुस्तानी सैद्धांतिक संगीत / कनिष्का पब्लिशर्स, न्यु दिल्ही / प्रथम संस्करण– 2002 / ISBN : 81-7391-509-1

(४) घोष, सरोज / कान्हड़ा का उद्‌भव और विकास / राधा पब्लिकेशन्स / प्रथम संस्करण– 2000 / ISBN : 81-7487-193-4

(५) चौधरी, सुभाषरानी / संगीत के प्रमुख शास्त्रीय सिद्धांत / कनिष्का पब्लिशर्स, न्यु दिल्ही / प्रथम संस्करण– 2002 / ISBN : 81-7391-527-X

(६) वसंत / राग-कोष / संगीत कार्यालय, हाथरस / 4TH Edition- फरवरी -1990 / ISBN : 81-85057-34-6

(७) पाठक, संनन्दा / हिन्दुस्तानी संगीत में राग की उत्पत्ति एवं विकास / राधा पब्लिकेशन्स, न्यु दिल्ही / प्रथम संस्करण- 1989

(८) राजन, रेनु / हिन्दुस्तानी संगीत में राग-लक्षण / राधा पब्लिकेशन्स, न्यु दिल्ही / प्रथम संस्करण- 1996 / ISBN : 81-7487-065-2

(९) वीर, राम अवतार / भारतीय संगीत का इतिहास / राधा पब्लिकेशन्स, न्यु दिल्ही / संस्करण- 1996 / ISBN : 81-7487-046-6 (Set), 81-7487-048-2 (Vol.-II)

(१०) भातखंडे, विष्णु नारायण / एडीटर : लक्ष्मीनारायण गर्ग / हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति क्रमिक पुस्तिका भाग-६ / संगीत कार्यालय, हाथरस / May-1993 / ISBN : 81-85057-11-7, 81-85057-16-8

(११) आचार्य, शिवराज / नारदीय शिक्षा / सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन / चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी / पुनः मुद्रित संस्करण- 2002 / ISBN : 9789385098369

(१२) मिश्र, श्यामदास / इण्टर रागांजली राग एवं शास्त्र / पूर्णिमा प्रकाशन / नवीन संस्करण अक्तुबर- 1990

(१३) कुमार, अरविन्द / राग एक अध्ययन / सिद्धार्थ प्रकाशन / प्रथम संस्करण-2000

(१४) निगम, वी. एस. / संगीत कौमुदि भाग-२ / श्रीमती केशरकुमारी निगम, लखनौ

(१५) गर्ग, लक्ष्मीनारायण / निबंध संगीत / संगीत कार्यालय, हाथरस / ग्यारवां संस्करण, नवेम्बर-1989 / ISBN : 81-85057-29-X

(१६) गर्ग, प्रभुलाल(अनुवादक)/ भातखंडे संगीतशास्त्र हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति भाग-३ / संगीत कार्यालय, हाथरस / तृतिय संस्करण, जून-1984

(१७) गर्ग, लक्ष्मीनारायण / हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति क्रमिक पुस्तकमालिका भाग-६ / संगीत कार्यालय, हाथरस / संस्करण, अक्तुबर -1987 / ISBN : 81-85057-11-7, 81-85057-16-8

(१८) परांजपे, सराच्चंद्र श्रीधर / भारतीय संगीत का इतिहास / चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी / द्वितीय संस्करण, 1985

(१९) श्रीवास्तव, हरिश्चंद्र / हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति क्रमिक पुस्तकमालिका भाग–४ / संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद

(२०) झा, रामाश्रय (रामरंग) / अभिनव गीतांजली भाग–१ / संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद / संस्करण, 2020

(२१) झा, रामाश्रय (रामरंग) / अभिनव गीतांजली भाग–२ / संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद / अष्टम संस्करण, 2020

(२२) झा, रामाश्रय (रामरंग) / अभिनव गीतांजली भाग–३ / संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद / अष्टम संस्करण, 2019

(२३) झा, रामाश्रय (रामरंग) / अभिनव गीतांजली भाग–४ / संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद / पंचम संस्करण, 2020

(२४) झा, रामाश्रय (रामरंग) / अभिनव गीतांजली भाग–५ / संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद / पंचम संस्करण, 2020

(२५) बेनर्जी, गीता / रागशास्त्र भाग–१ / संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद / षष्टम आवृत्ति, 2014

(२६) बेनर्जी, गीता / रागशास्त्र भाग–२ / संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद / षष्टम आवृत्ति, 2014

(२७) हिराणी, चंद्रकांत / स्वर से ईश्वर / प्रथम आवृत्ति, 2009

(२८) हिराणी, चंद्रकांत / अप्रचलित राग / शर्मा पब्लिकेशन, राजस्थान / प्रथम संस्करण, 2009

(२९) हिराणी, चंद्रकांत / राग वैभव / प्रवीण प्रकाशन प्रा. लि., राजकोट / प्रथम आवृत्ति, 2005

(३०) हिराणी, चंद्रकांत / ताल संगीत नो महाप्राण / प्रवीण प्रकाशन प्रा. लि., राजकोट / प्रथम आवृत्ति, 2007

(३१) राठौड, भारती / शास्त्रीय संगीत की मधुरिमा : ठुमरी / प्रथम आवृत्ति, 2004

(३२) बृहस्पति, सौभग्यवर्धन / संगीत –चिन्तन (प्रथम खंड)/ अभिषेक पब्लिकेशन, चण्ड़िगढ़ / संस्करण : 2004 / ISBN: 81-8247-022

(३३) गुणे, पं. नारायण लक्ष्मण / संगीत प्रवीण दर्शिका (१ भाग से ४) / श्रीमती साधना गुणे, इल्हाबाद–३ / पाठक पब्लिकेशन, इल्हाबाद / संस्करण –2002

(३४) शाह, सेफाली / संपूर्ण विशारद / ॐ संगीत अकादमी, अहमदाबाद / संस्करण –2003

(३५) जादव, नगीन भाई / संगीत अलंकार प्रथम /संस्करण –2011

(३६) श्रीवास्तव, हरिश्चंद्र / प्रभाकर प्रश्नोत्तर / संगीत सदन प्रकाशन, इल्हाबाद / संस्करण – 2008

(३७) श्रीवास्तव, हरिश्चंद्र / प्रवीण प्रवाह / संगीत सदन प्रकाशन, इल्हाबाद / संस्करण – 2009

(३८) जयपुरवाले, लक्ष्मण प्रसाद / संगीत ज्ञान प्रकाश (कुँवरश्याम घराने की अनमोल बंदिशों का संग्रह) / संगति जस प्रकाशन मंदिर / संस्करण – 1999

(३९) सेवक, जय / ख्याल गायन का वैभव – भींडी बाजार घराना / संस्करण – 2008

(४०) मुंजाल, अंजु / सरस्वती संगीत मंजूषा / सरस्वती हाउस प्रा. लि., नई दिल्ही / तृतिय संस्करण – 2010

(४१) हलदणकर, श्रीकृष्ण (बबनराव) / मिल्नोत्सुक दो तानपूरे (जयपुर एवं आगरा गायकी के सौन्दर्यतत्त्व) / विद्यानिधि प्रकाशन, नई दिल्ही / संस्करण – 2001 / ISBN 81-86700-36-6

(४२) यजुर्वेदी, सुलोचना / संगीत चिंतामणि / संगीत कार्यालय, हाथरस / तृतिय संस्करण

(४३) ठाकुर, जयदेव सिंह / भारतीय संगीत का ईतिहास / विश्वविद्यालय / ISBN : 978-81-7124-724-0

(४४) जोशी, हेमलता / राग और रस / निर्मल पब्लिकेशन

(४५) मज़िदखान, अब्दुल / संगीत के जवाहरात / वाणी प्रकाशन / प्रथम संस्करण–2008 / ISBN : 978-81-8143-869-0

(४६) मित्र, राजेश्वर / संगीत रत्नाकर – एक अध्ययन (शारंगदेव प्रणीत) / राधाकृष्ण पकाशन प्रा. लि., दिल्ही / प्रथम स्वरगत अध्याय : स्वरगताध्याय / प्रथम संस्करण–1999 / ISBN : 81-7119-438-9

(४७) पाल, जे. / संगीत पत्रीका– राग द्वारा रोग निवृत्ति / जनवरी–1950

(४८) लक्ष्मी, एम. विजय / संगीत मकरंद (नारदमूनि रचयीता) / प्रकाशक : जी. एच. तारलेकर / ISBN : 81-212-0526-3

(४९) त्रिवेदी, रागिनी / राग विबोध – मिश्रबानी / हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निर्देशालय, दिल्ही विश्वविद्यालय / संस्करण : २०१० / ISBN : 97-8938-01-72361

(५०) A Treatise on the Music of Hindustan / Forgotten Books / 6th January – 2019 / ISBN – 10 : 13331555212 / ISBN – 13 : 978-1333155216

(५१) गर्ग, लक्ष्मीनारायण / मारवा थाट अंक–१ / संगीत कार्यालय, हाथरस / जनवरी–1959